विचार बिन्दु

कोई भी इतना धनि नहीं कि पड़ौसी के बिना काम चला सके –डेनिस कहावत

गरीबी दूर किये बिना कोई व्यक्ति या समाज स्वस्थ और प्रसन्न नहीं रह सकता

बात कम से कम 5,000 से ,8000 पहले की है। उत्तर भारत के घने वनों में महर्षि-वैज्ञानिक भगवान् आत्रेय अपने शिष्यों को चिकित्सा-विज्ञान सहित आयु का समग्र विज्ञान पढा रहे थे। उनके छः दिग्गज विद्यार्थी-जो आगे चलकर प्राचीन भारत के महान चिकित्सा-वैज्ञानिक बने-चिकित्सा के मूल सिद्धान्तों को समझने में व्यस्त थे। तभी एक विचित्र बात आती है:–

;सुनो अग्निवेश! जीवन में आजीविका और धन प्राप्ति का प्रयास न करने से बडा कोई पाप नहीं।; भगवान् आत्रेय ने अपने एक शिष्य को संबोधित करते हुये कहा।

भगवान् आत्रेय ने अपनी बात को आगे बढाते हुये स्पष्ट किया (च.सू.11.5)-

अथ द्वितीयां धनैषणामापद्येत, प्राणेभ्यो ह्यनन्तरं धनमेव पर्येष्टव्यं भवति; न ह्यतः पापात् पापीयोऽस्तियदनुपकरणस्य दीर्घमायुः, तस्मादुपकरणानि पर्येषु यतेत।

तत्रोपकरणोपायाननुव्याख्यास्यामः; तद्यथा कृषिपाशुपाल्यवाणिज्यराजोपसेवादीनि, यानि चान्यान्यपि सतामविगर्हितानि कर्माणि वृत्तिपुष्टिकराणि विद्यात्तान्यारभेत कर्तुं;

तथा कुर्वन् दीर्घजीवितं जीवत्यनवमतः पुरुषो भवति।

अर्थात् प्राणों के बाद दूसरे क्रम पर धन की इच्छा आती है। जीवन में व्यक्ति को धन कमाने या आजीविका प्राप्त करने का प्रयत्न करना आवश्यक है। पक्की तौर पर प्राणों के बाद धन ही महत्वपूर्ण है। निश्चय ही इससे बडा कोई पाप नहीं कि जिन्दगी भर स्वास्थ्य, सुख, धर्म और धन से विहीन जीवन हो। इसलिये धन प्राप्ति के उपाय करना आवश्यक है। इस हेतु जो उपकरण या साधन हैं उनमें खेती-बाडी, पशुपालन, वाणिज्य-व्यापार, सरकारी नौकरी या आजीविका को सुदृढ करने हेतु विद्वानों द्वारा सुझाये गये अन्य अच्छे कार्यों को प्रारंभ कर आजीविका तथा धन संपत्ति अर्जित करते हुये समाज में उचित सम्मान और प्रतिष्ठापूर्वक दीर्घ-जीवन जीना चाहिये।

यह सुनकर आज हमें यह आश्चर्यजनक प्रतीत हो सकता है कि आयु के विज्ञान या चिकित्सा-विज्ञान से संबंधित शिक्षा-सत्र में भगवान् आत्रेय अचानक गरीबी, धनार्जन और संपत्ति जैसे विषय पर व्याख्यान क्यों दे रहे हैं। वस्तुतः आयुर्वेद की यह शिक्षा अपने समय से बहुत आगे थी। आज विश्व के सर्वाधिक प्रतिष्ठित शोध जर्नल्स में प्रकाशित शोध विश्लेषण निर्विवाद सिद्ध करते हैं कि जो लोग गरीबी में रहते हैं, वे मानसिक बीमारियों से प्रभावित रहते हैं देखें, एम. रिडले इत्यादि, साइंस, 370(6522): 11 दिसम्बर, 2020। गरीबी बौद्धिक और संज्ञानात्मक क्रियाओं और क्षमताओं को बिगाडती है। रुपये-पैसे की कमी के कारण गरीब की निर्णय-क्षमता दुष्प्रभावित होती है। ऐसा इसलिये होता है क्योंकि गरीबी व्यक्ति के दिमाग पर संज्ञानात्मक-बोझ डालती है। यह बोझ दिमाग को इतना चूस लेता है कि उन्नति पर ध्यान देने की क्रिया बाधित होती है, व्यक्ति प्रयास ही नहीं कर पाता और गरीबी और बीमारी के भंवर में फंसा रहता है देखें, आनंदी मणि इत्यादि, साइंस, 341(6149): 976-980, 2013; एस.एल जेम्स इत्यादि, लैंसेट, 392(10159):1789-1858 2018; ई. रेनाही इत्यादि, यूरोपियन जर्नल ऑफ़ पब्लिक हेल्थ, 28 (2):269-275, 2018। गरीबी और ज़रा-जीर्णता (फ्रेलिटी) के मध्य बहुत मज़बूत रिश्ता हाल की शोध से स्पष्ट होता है देखें, ए.ए. हयाजनेह, एम. रबाबा, डेमेंशिया एंड जेरियाट्रिक कॉग्निटिव डिसऑर्डर्स, 50(5): 407-413, 2022। सकल-कारण मृत्यु दर को बढ़ाने में गरीबी एक बहुत बड़ा जोखिम कारक है और इस विषय पर 300 से अधिक शोधपत्र प्रकाशित हो चुके हैं। दुनियाभर में गरीबी और स्वास्थ्य के मध्य रिश्तों पर 31 दिसम्बर 2022 तक 78,500 से अधिक शोधपत्र प्रकाशित हो चुके हैं। अब आपको यह स्पष्ट हो गया होगा कि चिकित्सा विज्ञान में 8,000 साल पहले धनार्जन करने व गरीबी हटाने की सलाह क्यों दी गई होगी।

गरीबी में जीवन-यापन करने वाले लोग मानसिक बीमारी से क्यों प्रभावित रहते हैं? इस विषय पर गरीबी और मानसिक बीमारियों जैसे अवसाद और चिंता आदि के बीच अंतर्निहित संबंध पर हुये अध्ययन रोचक हैं। अनुसंधान से पता चलता है कि एक तरफ गरीबी मानसिक बीमारी को बढ़ावा देती है और वहीं यह रोजगार के अवसरों तक पहुँच को कम करती है। यह इस बात से भी सिद्ध होता है कि गरीबों के जीवन में आय बढ़ाने के उपाय और मनोवैज्ञानिक चिकित्सकीय हस्तक्षेप दोनों मिलकर आर्थिक लाभ उत्पन्न करते हैं और स्वास्थ्य में बेहतरी लाते हैं। इसके उलट नकारात्मक आर्थिक झटके मानसिक बीमारी का कारण बनते हैं, और कैश ट्रांसफर जैसे एंटी-पावर्टी प्रोग्राम मानसिक स्वास्थ्य में सुधार करते हैं। गरीबी, स्वास्थ्य और प्रसन्नता के मध्य इन पक्के रिश्तों की समझ प्रभावी नीतियों को विकसित और क्रियान्वित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा।

एक अन्य उदाहरण देखें तो आर्थिक रूप से वंचित लोग कोविड-19 के कारण मृत्यु की आशंका में सर्वाधिक फंसते हुये पाये गये हैं। यह जोखिम गरीबी के कारण तनाव, कोमोर्बिडिटी, और स्वास्थ्य देखभाल तक पहुंच की कमी के कारण बढ़ता है। इस महामारी ने समाज में आर्थिक विषमताओं को उजागर तो किया ही है, इस विषमता को बढ़ाया भी है। यहाँ बेहतर स्वास्थ्य के लिये गरीबी दूर करने की आवश्यकता तो सिद्ध ही होती है। साथ ही, समाज में आर्थिक रूप से सर्वाधिक वंचित लोगों की कमजोरियों को दूर करने के लिये सामाजिक कल्याण में सुधार के लिये दीर्घकालिक कार्यक्रम क्रियान्वयन की अनिवार्यता भी सिद्ध होती है।

आने वाले दशकों में मानसिक बीमारी का बोझ बढ़ने की आशंका है। गरीबी और मानसिक-शारीरिक स्वास्थ्य के संबंधों की इस भयावहता को देखते हुये ही आयुर्वेद धन कमाने और गरीबी दूर करने की सलाह देता है। इसीलिये आयुर्वेद में सुखायु और हितायु की ऐतिहासिक अवधारणा सर्वकालिक रूप से उपयोगी है।

अब यह स्पष्ट रूप से ज्ञात है कि आय कम होने से मानसिक बीमारी बढ़ती है। फसलों के खराब होने से आमदनी के नकारात्मक झटके, कल-कारखाने बंद होने के कारण नौकरी का छूटना या आमदनी में गिरावट आदि मानसिक स्वास्थ्य को खराब करते हैं। इसके विपरीत अर्थशास्त्रीय क्लिनिकल ट्रायल्स में पाया गया है कि कैश ट्रांसफर और गरीबी हटाने के व्यापक प्रयास अवसाद और चिंता को कम करते हैं। जैसा कि स्वाभाविक है कि आमदनी और खर्च की अनिश्चितताओं से गरीबी का बडा रिश्ता है। अतः चिंता और अनिश्चितता मानसिक स्वास्थ्य को बिगाड़ देती हैं। इसके विपरीत स्वास्थ्य, रोजगार, बीमा और आमदनी की कमी के झटकों से उबरने के अन्य साधन प्रदान करने से अवसाद और चिंता कम हो जाती और मानसिक स्वास्थ्य ठीक रहता है। इसके अलावा गरीबी के कारण आवास की अपर्याप्त उपलब्धता, गरीबी वाले क्षेत्रों में प्रदूषण के कारण पर्यावरणीय तनाव, अपर्याप्त नींद आदि भी मानसिक बीमारी को बढ़ा देते हैं। बचपन में गरीबी की स्थिति, या यहाँ तक कि माता के गर्भाशय में अनुभव की जाने वाली गरीबी अंततः कुपोषण और अन्य तनावों की आशंका को बढ़ाती है। इन सबके कारण संज्ञानात्मक या बौद्धिक विकास गड़बड़ाने से वयस्क होते होते मानसिक बीमारी घेर लेती है। स्वाभाविक है कि गर्भवती महिलाओं और छोटे बच्चों की देखभाल करने वाले सरकारी तंत्र को वित्तीय सहायता प्रदान करने हेतु तत्पर रहना आवश्यक है। एक बात यहाँ यह भी समझना चाहिये कि गरीबी बदतर शारीरिक स्वास्थ्य से भी जुड़ी है। गरीबी के कारण आघात, हिंसा और अपराध में लिप्त हो जाने का भारी जोखिम रहता है। गरीबी निम्न सामाजिक स्थिति के लिये भी उत्तरदायी है जिसके कारण शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य दुष्प्रभावित होता है।

असल में गरीबी के कारण उत्पन्न मानसिक बीमारियाँ भविष्य में आर्थिक उन्नयन के लिये किये जाने वाले प्रयत्नों के परिणामों को भी दुष्प्रभावित करती हैं। अवसाद और चिंता लोगों के सोचने-समझने के तरीके को प्रभावित करते हैं। परेशानी में ध्यान लगे रहने के कारण स्मृति में विकृति आती है। इस तरह के प्रभावों से आर्थिक प्राथमिकतायें किनारे हो जाती हैं। और इस प्रकार परेशानी में फंसे लोगों द्वारा लिये जाने वाले महत्वपूर्ण आर्थिक निर्णय गलत होने लगते हैं। गरीबी के कारण एकाग्रता की कमी और अधिक काम की थकान उत्पादकता को गिरा देती है। गरीबी-जन्य मानसिक बीमारी एक ऐसे सामाजिक कलंक को लगा देती है जिसके कारण आगे व्यक्ति को श्रम-बाजार में तवज्जो नहीं मिलती। मानसिक बीमारी के साथ अगर अन्य गैर-संचारी रोगों जैसे मधुमेह और दिल की बीमारी आदि की को-मोर्बिडिटी भी है तो उस व्यक्ति के जीवन में भयावह स्वास्थ्य व्यय की आशंका को बढ़ जाती है। मानसिक बीमारी युवाओं में शिक्षा और कौशल प्राप्त करने की दिशा में भारी बाधा उत्पन्न कर सकती है। महिलाओं में मानसिक बीमारियों का असमान रूप से अधिक प्रसार लैंगिक असमानताओं को बढ़ा देता है। माता-पिता की मानसिक बीमारी बच्चों के संज्ञानात्मक विकास और शैक्षिक गतिविधि को प्रभावित करती है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी मानसिक बीमारी और गरीबी के भंवर में फंसा सकती है। उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट हो जाता है कि क्यों आयुर्वेद वैध तरीकों से धन कमाने की सलाह देता है।

आने वाले दशकों में मानसिक बीमारी का बोझ बढ़ने की आशंका है। हालांकि अमीर व्यक्तियों के मानसिक रूप से बीमार होने की संभावना कम होती है, लेकिन अमीर देशों में मानसिक बीमारी की दर कम नहीं हो रही है। कारण अनेक हैं। जलवायु परिवर्तन से मानसिक स्वास्थ्य खराब होने की आशंका, उच्च तापमान के दुष्प्रभाव से कृषि पैदावार में कमी या सूखा के कारण बारिश और पानी की आपूर्ति में परिवर्तन, मौसमी आपदाओं और हिंसक संघर्ष की आशंका बढ़ जाती है। गरीबी और मानसिक-शारीरिक स्वास्थ्य के संबंधों की इस भयावहता को देखते हुये ही आयुर्वेद धन कमाने और गरीबी दूर करने की सलाह देता है। इसीलिये आयुर्वेद में सुखायु और हितायु की ऐतिहासिक अवधारणा सर्वकालिक रूप से उपयोगी है।

सुखमायुः हितमायुः दोनों रणनीतियों को एक साथ आजीवन क्रियान्वित करना ही स्वास्थ्य और प्रसन्नता देता है क्योंकि स्वयं के लिये सुखकारी और समाज के लिये हितकारी जीवन जीने की साझा युक्ति सर्वोपरि है। इसीलिये सुखी व दुःखी और हितकारी व अहितकारी जीवन के लक्षणों का वर्णन आयुर्वेद में एक साथ आता है (च.सू.30.24):

तत्र शारीरमानसाभ्यां रोगाभ्यामनभिद्रुतस्य विशेषेण यौवनवतः समर्थानुगतबलवीर्ययशः पौरुषपराक्रमस्य ज्ञानविज्ञानेन्द्रियेन्द्रियार्थबलसमुदये वर्तमानस्य

परमर्द्धिरुचिरविविधोपभोगस्य समृद्धसर्वारम्भस्य यथेष्टिवचारिणः सुखमायुरुच्यते; असुखमतो विपर्ययेण; हितैषिणः पुनर्भूतानां परस्वादुपरतस्य सत्यवादिनः शमपरस्य परीक्ष्यकारिणोऽप्रमत्तस्य त्रिवर्गं परस्परेणानुपहतमुपसेवमानस्य पूजार्हसम्पूजकस्य ज्ञानविज्ञानोपशमशीलस्य

वृद्धोपसेविनःसुनियतरागरोषेर्ष्यामदमानवेगस्य सततं विविधप्रदानपरस्य

तपोज्ञानप्रशमनित्यस्याध्यात्मविदस्तत्परस्य लोकमिमं चामुंचावेक्षमाणस्य स्मृतिमतिमतो हितमायुरुच्यते; अहितमतो विपर्ययेण॥

तात्पर्य यह कि यदि व्यक्ति (1) शारीरिक और मानसिक रोगों से मुक्त है, (2) विशेषकर युवावस्था में है, (3) सभी कार्य करने में समर्थ है, (4) बल, वीर्य, यश, पराक्रम, जानकारी और यथार्थ ज्ञान, कौशल युक्त हो, और पाँचों इंद्रियों और उनसे संबंधित विषयों के बल के समुच्चय से युक्त है, (5) उत्तम धन-सम्पदा वाला है और उपभोग हेतु सभी वस्तुओं से संपन्न है व इन सबके उपभोग में सक्षम है, (6) प्रारम्भ किये सभी कार्य पूर्ण हो रहे हों, (7) स्वयं की इच्छा अनुसार विचरण कर सकता हो या चल-फिर सकता हो, ऐसे व्यक्ति का जीवन सुखी जीवन होता है। और इस सबके उलट यदि इन सबका अभाव हो तो दुःखी जीवन होता है। इसी प्रकार जो व्यक्ति (1) सभी प्राणियों का हितचिंतक, (2) दूसरे का धन ना छीनने वाला, (3) सत्य बोलने वाला, (4) शांतिप्रिय, (5) कार्यों को सोच विचार कर क्रियान्वित करने वाला और सावधान, (6) अर्थ, धर्म, काम जैसे पुरुषार्थ का पालन करने वाला, (7) श्रेष्ठ व्यक्तियों का सम्मान करने वाला, (8) ज्ञानशील, विज्ञानशील, शांतिशील, (9) बडे-बूढ़ों की सेवा करने वाला, (10) राग, क्रोध, ईर्ष्या, मद, मान के वेगों पर उच्चकोटि का नियंत्रण रखने वाला, (11) निरंतर दानशील, (12) सदैव आत्म-नियंत्रण, ज्ञान, शांति, विनम्रता वाला, (13) आध्यात्म की समझ और पालन करने वाला, (14) लोक-परलोक का विचार करने वाला, स्मरण-शक्ति और बुद्धि से युक्त हो, ऐसे व्यक्ति की आयु हितकारी कही जाती है। इसके उलट अहितकारी कही जाती है। इन सभी कारकों को ध्यान से वर्गीकृत करने पर में सुखमायुः में स्वयं की उन्नित और हितमायुः में औरों की उन्नति और परोपकार स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

इस विचार-विमर्श का मूल सन्देश क्या है? मूल सन्देश यह है कि आयुर्वेद की सलाह मानकर गरीबी दूर करने के सभी उचित प्रयत्न करना चाहिये। यही सुखकारी और हितकारी जीवन जीने का रास्ता है।

–अतिथि सम्पादक
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त तथा वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

अक्षरों की आवाज सुनानी होगी राजस्थान को

विश्व साक्षरता दिवस पर विशेष

राजेन्द्र जोशी

पाटी गई, कापी गई
गई पेंसिल अबकी बार
मिट गई आखर की धार
अब तो चेतो मेरी सरकार।

शिक्षा और साक्षरता उतनी ही जरूरी है जितना मनुष्य को जीने के लिए हवा और पानी की जरूरत होती है। देश भर में साक्षरता अभियानों का डंका बजने के बाद पिछले एक दशक से राजस्थान में अक्षर की धार मिटने लगी है। राजस्थान के पास साक्षरता संचालन के लिए लम्बा-चौड़ा लवाजमा मौजूद है। ब्लॉक से राज्य स्तर तक सैकड़ो अधिकारी-कर्मचारी कार्यरत है। स्थाई विभाग होने के बावजूद भी 2001 के बाद अक्षर की आवाज सुनाई नहीं दे रही। भारत सरकार की कार्य योजना के भरोसे हाथ पैर हाथ धरे बैठा राजस्थान पिछले एक दशक से निरक्षरता उन्मूलन के लिए खुद के बूते कोई बड़ी योजना नहीं बना सका। प्रदेश अपनी 36 प्रतिशत असाक्षर जनता को कब साक्षर करेगा।

राजस्थान में साक्षरता के क्षेत्र में उल्लेखनीय काम किया था। लगभग 50 प्रतिशत महिला और 21 प्रतिशत पुरुष आज भी अक्षरों के आलोक से दूर हैं। शिक्षा और साक्षरता उतनी ही जरूरी है जितना मनुष्य को जीने के लिए हवा और पानी की जरूरत होती है। देश भर में साक्षरता अभियानों का डंका बजने के बाद पिछले एक दशक से राजस्थान में अक्षर की धार मिटने लगी है। राजस्थान के पास साक्षरता संचालन के लिए लम्बा-चौड़ा लवाजमा मौजूद है। ब्लॉक से राज्य स्तर तक सैकड़ो अधिकारी-कर्मचारी कार्यरत है। स्थाई विभाग होने के बावजूद भी 2001 के बाद अक्षर की आवाज सुनाई नहीं दे रही। भारत सरकार की कार्य योजना के भरोसे हाथ पैर हाथ धरे बैठा राजस्थान पिछले एक दशक से निरक्षरता उन्मूलन के लिए खुद के बूते कोई बड़ी योजना नहीं बना सका। प्रदेश अपनी 36 प्रतिशत असाक्षर जनता को कब साक्षर करेगा। राजस्थान में साक्षरता के क्षेत्र में उल्लेखनीय काम किया था। लगभग 50 प्रतिशत महिला और 21 प्रतिशत पुरुष आज भी अक्षरों के आलोक से दूर हैं। वर्तमान में संचालित नवभारत साक्षरता कार्यक्रम पूरी तरह डिजिटल कार्यक्रम है विचारणीय सवाल तो यह है कि असाक्षर को साक्षर बनाने के लिए स्लेट-पेंसिल और कॉपी की आवश्यकता होती है। जब तक असाक्षर ग्रुप के हाथ में यह सब नहीं हो तो ऐसे लोगों को साक्षर बनाने का डिजिटल तरीका समझ से परे है। और वह भी उन लोगों के भरोसे जो खुद अभी डिजिटल तकनीक से परिचित भी नहीं है।

साक्षरता अभियानों के संचालन में स्थानीय स्तर पर परिस्थितियों के अनुरूप कार्य योजना बनाई जानी चाहिए। यह कार्य संपूर्ण साक्षरता अभियान के दौरान किया गया जब प्रत्येक जिले की अपनी कार्य योजना थी, ऐसी कार्य योजनाओं के कारण ही साक्षरता प्रतिशत बढा था। साक्षरता अभियानों की सफलता कार्यक्रम पर नहीं है, सरकारी दफ्तरों से ही संभव नहीं है बल्कि सघन वातावरण निर्माण से संभव होती है। 2047 में हमारे प्रधानमंत्री भारत को आत्मनिर्भर बनाने की बात कर रहे है। आत्मनिर्भरता संपूर्ण साक्षरता से ही संभव है। आत्मनिर्भर बनाने के लिए जिला कार्य योजनाओं का निर्माण राजस्थान को करना चाहिए। भारतवर्ष में राजस्थान अकेला ऐसा प्रदेश है जिसके पास नियमित साक्षरता निदेशालय स्थापित है। शेष प्रदेशों में ऐसी गुणवत्ता नहीं होने के बावजूद वह हमसे अधिक साक्षरता दर में वृद्धि कर रहे हैं। अन्तर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस के अवसर पर राजस्थान को संपूर्ण साक्षर बनाने का संकल्प एक बार फिर से दोहराना होगा।

–राजेन्द्र जोशी,
शिक्षाविद-साहित्यकार

जोधपुर एयरफोर्स स्टेशन पर चल रहे "तरंग-शक्ति" में ओपन-डे शो हुआ

आसमान में भारतीय लड़ाकू विमान सुखोई-30, तेजस और हेलिकॉप्टर ने करतब दिखाए

जोधपुर, (कासं)। भारतीय वायु सेना का सबसे बड़ा अभ्यास तरंग-शक्ति (फेज-2) जोधपुर एयरफोर्स स्टेशन पर चल रहा है। शनिवार को ओपन-डे शो हुआ। आसमान में भारतीय लड़ाकू विमान सुखोई-30, तेजस और हेलिकॉप्टर ने प्रचंड ने करतब दिखाए। सूर्यकिरण के 9 हॉक्स विमान ने आसमान में तिरंगा बनाया और

- **सूर्यकिरण के 9 हॉक्स विमान ने आसमान में तिरंगा बनाया और दर्शकों को रोमांचित किया**
- **एयरफोर्स स्टेशन पर भारत सहित 24 देशों के 400 जवानों ने सामूहिक योग किया**

जोधपुर एयरफोर्स स्टेशन पर भारतीय वायु सेना के सबसे बड़े अभ्यास तरंग-शक्ति (फेज-2) में आसमान में भारतीय लड़ाकू विमानों ने विभिन्न प्रकार के करतब दिखाये।

दर्शकों को रोमांचित किया।

इससे पहले शनिवार सुबह छह बजे एयरफोर्स स्टेशन पर भारत सहित 24 देशों के 400 जवानों ने सामूहिक योग किया। एयरफोर्स स्टेशन पर हरक्यूलिस सी-130 विमान के सामने यूएई, सिंगापुर, ग्रीस, ऑस्ट्रेलिया, जापान, अमेरिका और श्रीलंका के जवानों ने प्राणायाम व आसन किए। वहीं सूर्यकिरण के 9 हॉक्स विमान ने यूथ को डेडिकेट करते हुए फॉर्मेशन बनाई। हेलिकॉप्टर प्रचंड ने जब आसमान में करतब दिखाए तो दर्शक रोमांचित हो उठे। सुबह 11 बजे ओपन-डे शो की शुरुआत में अग्निवीर वायु की महिला जवानों ने प्रस्तुति दी। इसके बाद फाइटर जेट ने करतब दिखाना शुरू किया। सबसे पहले स्वदेशी लड़ाकू विमान तेजस आसमान में उड़ा। तेजस ने करीब 10 मिनट तक आसमान में करतब दिखाए। तेजस के बाद सूर्यकिरण के हॉक्स विमान उड़े। ये दर्शकों के एकदम ऊपर से निकले तो सभी रोमांचित हो गए। सूर्यकिरण के 9 हॉक्स विमान ने लो लेवल फ्लाइंग की। धुएं से तिरंगा बनाया। इन विमान में बैठे विंग कमांडर हवा में एक-दूसरे को क्रॉस करते हुए अपने-अपने विमान को लेकर गए। हॉक्स विमान 360 डिग्री राउंड लेते हुए हवा में उड़े। सूर्यकिरण के 9 हॉक्स विमान ने यूथ को डेडिकेट करते हुए फॉर्मेशन बनाई। डीएनए और राइट एंड लेफ्ट फॉर्मेशन भी बनाई। इसके बाद सुखोई-30 एमकेआई ने उड़ान भरी। सुखोई-30 ने करीब 150 मीटर की ऊंचाई पर लूप और 180 डिग्री में उड़ते हुए वर्टिकल चार्ली फॉर्मेशन बनाया। हेलिकॉप्टर प्रचंड ने भी आकाश में कलाबाजियां दिखाईं। इंडियन एयरफोर्स की एयर वॉरियर ड्रिल टीम के 28 मेंबर ने हाथ में राइफल लेकर म्यूजिक पर परफॉर्मेंस दी।

आरपीएससी ने जालसाजी पर लगाम के लिए वन टाइम रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया में बदलाव किया

अब वन टाइम रजिस्ट्रेशन के दौरान अभ्यर्थी को वेब केम के माध्यम से लाइव फोटो भी कैप्चर करनी होगी

अजमेर, (कासं)। राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा परीक्षाओं में जालसाजी व फोटों टेंपरिंग कर आवेदन करने वाले व्यक्तियों पर लगाम के लिए वन टाइम रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया में बड़ा बदलाव किया गया है। अब वन टाइम रजिस्ट्रेशन के दौरान अभ्यर्थी को वेब केम के माध्यम से लाइव फोटो भी कैप्चर करनी होगी, जिन अभ्यर्थियों द्वारा पूर्व में वन टाइम रजिस्ट्रेशन में लाइव फोटो कैप्चर करवा रखी है, वे अभ्यर्थी भी पूर्व की फोटो अस्पष्ट होने की स्थिति में ओटीआर में लाइव फोटो कैप्चर करवा सकते हैं। उनके लिए ये अवसर एक बार ही उपलब्ध होगा। आयोग की इस कार्यवाही से डमी अभ्यर्थियों पर लगाम के साथ ही आवेदन के दौरान गलत फोटों अपलोड होने का बहाना देने वाले अभ्यर्थियों की भी प्रभावी रोकथाम सुनिश्चित हो सकेगी। संशय की स्थिति में आयोग द्वारा परीक्षा दौरान की गई वीडियोग्राफी में उपस्थित अभ्यर्थी का मिलान ओटीआर में कैप्चर की गई फोटो से किया जा सकेगा। आयोग इस हेतु आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का भी इस्तेमाल करेगा।

- **जिन अभ्यर्थियों द्वारा पूर्व में वन टाइम रजिस्ट्रेशन में लाइव फोटो कैप्चर करवा रखी है, वे अभ्यर्थी भी पूर्व की फोटो अस्पष्ट होने की स्थिति में ओटीआर में लाइव फोटो कैप्चर करवा सकेंगे**

लाइव फोटो कैप्चर की प्रक्रिया :-अभ्यर्थी को अपने ओटीआर में ओटीआर ईकेवाईसी सेक्शन में जाकर लाइव फोटो कैप्चर लिंक पर क्लिक कर 5 सेकंड के टाइमर के बाद अपनी पलक दो-तीन बार झपकानी होगी। यदि फोटो बंद आंखों के साथ कैप्चर हो तो फोटो पुनः कैप्चर करनी होगी। फोटो कैप्चर करते समय अभ्यर्थी को सीधा कैमरे की तरफ देखना होगा। यदि अभ्यर्थी चश्में का इस्तेमाल करता है तो फोटो चश्में के साथ ही कैप्चर करानी होगी। इसमें यह विशेष ध्यान रखा जाना होगा कि चश्में के ग्लास पर रोशनी के प्रतिबिंब के कारण फोटो अस्पष्ट अथवा चमक के साथ कैप्चर न हो। फोटो कैप्चर के दौरान अभ्यर्थी को यह सुनिश्चित करना होगा कि फोटो साफ तथा सुस्पष्ट बैकग्राउंड के साथ हो। धुंधली अथवा अंधकारमय फोटो मान्य नहीं होगी। स्पष्ट फोटो कैप्चर होने तक अभ्यर्थी बार-बार सुस्पष्ट फोटो कैप्चर का प्रयास कर सकते हैं, किंतु एक बार ओटीपी के माध्यम से वेरिफिकेशन पश्चात फाइनल सब्मिट किये जाने के उपरांत इस सबंध में अवसर देय नहीं होगा। इसके बाद अभ्यर्थी द्वारा संबंधित चैक बाक्स में सही का निशान दर्ज कर यह प्रमाणित किया जाएगा कि "मैने उपरोक्त सारे दिशा-निर्देश पढ़ लिए हैं एवं मुझे ज्ञात है कि आवेदन-पत्र एवं प्रवेश-पत्र पर इसी फोटो का प्रयोग किया जाएगा। फोटो के साफ एवं स्पष्ट न होने के कारण यदि मेरी पहचान सुनिश्चित नहीं हो पाती है तो मुझे परीक्षा से वंचित किया जा सकता है। बिना पर्याप्त रोशनी, अस्पष्ट, धुंधली, बंद आंख अथवा आड़ी-तिरछी फोटो होने पर मेरा आवेदन निरस्त किया जा सकता है, जिसकी समस्त जिम्मेदारी मेरी स्वयं की होगी।"

यह उल्लेखनीय है कि ऑनलाइन आवेदन करने वाले अभ्यर्थी के मोबाइल नंबर पर प्राप्त ओटीपी को दर्ज करने पर ही ऑनलाइन आवेदन फाइनल सब्मिट होता है।

राशिफल रविवार 8 सितम्बर, 2024

पंडित अनिल शर्मा

मार्गशीर्ष मास, शुक्ल पक्ष, पंचमी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2081, स्वाती नक्षत्र दिन 3:31 तक, ऐन्द्रयन योग रात्रि 12:05 तक, बव करण प्रातः 6:48 तक, चन्द्रमा आज तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-तुला, मंगल-मिथुन, बुध-सिंह, गुरू-वृष, शुक्र-कन्या, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज रवियोग दिन 3:31 से आरम्भ होगा। आज ऋषि पंचमी, भाई पांच, जैन संवत्सरी (पंचमी व्रत), रक्षा पंचमी, गुरू पंचमी है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः चर 7:46 से 9:19 तक, लाभ-अमृत 9:19 से 12:25 तक, शुभ 1:57 से 3:30 तक।

राहूकालः 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 6:13, सूर्यास्त 6:36

मेष
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

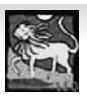

सिंह
आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। मित्रों के साथ मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

धनु
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

वृष
मित्रों/रिश्तेदारों से चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है। स्वास्थ्य में सुधार होगा। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा।

कन्या
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। आवश्यक कार्यों के लिए बाहर जा सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

मकर
अपने आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

मिथुन
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

तुला
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। मनोरंजन पर धन खर्च हो सकता है।

कुंभ
आज धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। शुभ-मांगलिक कार्य में भाग ले सकते हैं। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। घर-परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

कर्क
घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। आवश्यक कार्यों के लिए जाना पड़ सकता है।

वृश्चिक
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। दिन के मध्यान्ह पश्चात वर्तमान में चल रही परेशानियां दूर होने लगेगी।

मीन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में परेशानी हो सकती है।